ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मई 2019 (द्वितीय)

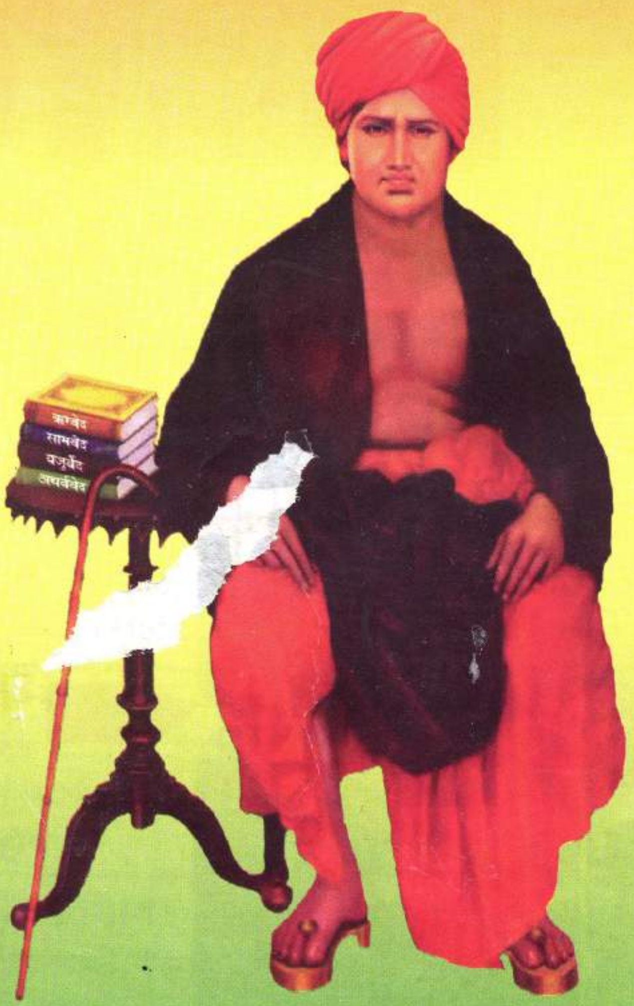

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

आर्य समाज देशराज कालोनी पानीपत द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य जी व सभा मंत्री श्री उमेद शर्मा जी।

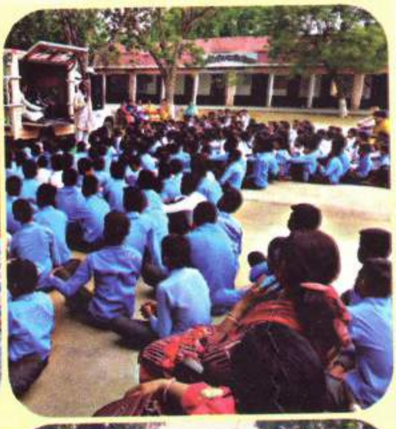

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 6

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2019 (द्वितीय)
15 से 30 मई, 2019 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (साधना) 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
3. दिव्य मन 6
4. डेरों का समर्थन काम न आया 8
5. आध्यात्मिक विषय व प्रेरक वचन 9
6. सत्संग महिमा 10
7. ऋषि दयानन्द ने सत्यधर्म और हमारे कर्त्तव्यों से परिचय कराया 11
8. सभा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) एवं प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम व शुल्क विवरण 13
9. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

जिज्ञासा-विमर्श (साधना)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे....

जिज्ञासा-5. एकाग्र अवस्था की प्राप्ति से ही क्या विवेकख्याति की प्राप्ति हो जायेगी? एकाग्र अवस्था तो खिलाड़ियों में, निशानेबाजों में, कामियों और क्रोधियों में भी पाई जाती है। यदि सत्त्वपुरुष अन्यताख्याति एकाग्रता से ही प्राप्त हो जाती है तो 'निरुद्ध और दग्धबीजभाव' अवस्था में क्या प्राप्त होगा?

–रामगोपाल गर्ग

समाधान-एकाग्र अवस्था की प्राप्ति ही विवेकख्याति नहीं है। विवेकख्याति की प्राप्ति में एकाग्र अवस्था साधन का काम करती है। लोक में जिस एकाग्रता का व्यवहार होता है, उसमें और योगदर्शन में वर्णित एकाग्रता में भेद है। खिलाड़ियों आदि की जो एकाग्रता है, वह योगदर्शन में जो मन की तीसरी अवस्था विक्षिप्त कही है, वह है। विक्षिप्त अवस्था की अच्छी स्थिति में एकाग्रता जैसा भान होता है। यथार्थ में वह विक्षिप्त अवस्था ही है, किन्तु लोक में इसी को एकाग्रता कह देते हैं। इस प्रकार की एकाग्रता से विवेकख्याति की प्राप्ति नहीं होती।

विवेकख्याति मन की चौथी अवस्था एकाग्रता से प्राप्त होती है। इसी से आत्मा को प्रकृति पुरुष का भेद ज्ञान होकर आत्मा लाभ होता है, अर्थात् आत्मा का दर्शन (अपने आपका दर्शन) होता है। इसी को सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं।

आपने कहा-निरुद्ध और दग्धबीजभाव अवस्था में क्या प्राप्त होता है? इसमें हमने देखा कि एकाग्रता से आत्मा की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार मन की पाँचवीं अवस्था निरुद्ध से परमात्मा की प्राप्ति होती है, ईश्वर का साक्षात्कार होता है और दग्धबीजभाव अवस्था होने पर अर्थात् अविद्यादि पाँचों क्लेशों के संस्कार दग्ध होनें पर सर्वथा नष्ट होने पर योगी को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

केवल आत्म-साक्षात्कार अथवा ईश्वर-साक्षात्कार होने मात्र से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, अपितु इनके साथ-साथ क्लेशों के दग्ध होने पर मोक्ष प्राप्त होता है।

जिज्ञासा-6. (क) प्राण चेतन हैं या जड़? अगर चेतन हैं-जैसा आपने कहा, तो फिर केन उपनिषद् का ऋषि ऐसा क्यों कहता है-इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और प्राण की पहुँच उस परमात्मा तक नहीं है, क्योंकि ये सभी जड़ हैं।

(ख) अगर जड़ हैं तो इसे प्रकृति तत्त्वों में क्यों नहीं गिना गया?

(ग) अगर परमात्मा का नाम ही प्राण है, जैसा आपने कहा तो फिर कहीं भी किसी शास्त्र में ईश्वर को प्राणवान् क्यों नहीं कहा गया? अनेक जगह आर्ष ग्रन्थों में ईश्वर को अप्राण की संज्ञा दी गई है, केवल आत्मा के साथ जुड़ने से (शरीर अवस्था में) आत्मा को प्राणी शब्द से सम्बोधित किया जाता है, ऐसा क्यों?

(घ) श्री उदयवीर शास्त्री जी की शास्त्र व्याख्या में मैंने कहीं पढ़ा है कि प्रलय काल और मोक्ष अवस्था में आत्मा का सम्बन्ध प्राण से नहीं रहता, ऐसा क्यों? आपने तो कहा है कि प्राण ईश्वर ही है, किन्तु ईश्वर तो सर्वव्यापकता गुण के कारण सभी जगह आत्मा सहित ओतप्रोत है, तो मोक्ष और प्रलयकाल काल में फिर प्राणस्वरूप ईश्वर क्या आत्मा से अलग हो सकता है?

(ङ) मनुष्य के मरने पर हम सभी कहते हैं कि अमुक व्यक्ति के प्राण निकल गये। वह अब मृतक शरीर है। जहाँ प्राण का आना-जाना बना रहता है, वहाँ प्राण की सर्वव्यापकता कैसे सिद्ध होगी, समष्टि रूप को छोड़कर?

(च) यजुर्वेद के 19वें अध्याय का 60वां मन्त्र प्राण के विषय में कहता है-

ओ३म् येऽअग्निष्वात्ता येऽअनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते। तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति॥ (यजु० 19-60)

मैं संस्कृत विद्या का विद्वान् नहीं हूँ। इस मन्त्र की व्याख्या भी परोपकारी पत्रिका में किसी आर्य विद्वान् द्वारा की गई, वह मैंने पढ़ी है, उनकी व्याख्या इस प्रकार है-

जो पितर अर्थात् माता-पिता, गुरु और विद्वान् लोग इत्यादि अग्नि विद्या और सोम विद्या और आनन्द से रहते हैं (तेभ्यः स्वराडसुनीतिम्) अर्थात् उनके हितार्थ स्वराड् जो

प्रकाश स्वरूप है वह परमेश्वर, असुनीति अर्थात् प्राण विद्या का प्रकाश कर देता है। हम प्रार्थना करते हैं कि (यथावशं तन्वं कल्पयाति) हे परमेश्वर! आप उनके शरीर सदा तेजस्वी और रोग रहित रखिये, जिससे हम उनसे उस विद्या (प्राण विद्या) का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

यहाँ इस व्याख्या से प्राण विद्या अन्य तत्त्वज्ञान आदि विद्याओं से अलग अति महत्त्व की बताई गई है, उसको अति विशेष विद्या का स्थान दिया गया है, अतः कृपा करके प्राण के बारे में शास्त्रोक्त रहस्य को बताने का कष्ट करें। **–रतनलाल सैनी, म.नं. 755/18, नजदीक राधा कृष्ण मन्दिर, गली दिल्ली वाली, मौहल्ला सैनियान, हिसार-125001 (हरयाणा)**

समाधान-आपकी जिज्ञासा परोपकारी मार्च के द्वितीय अंक के जिज्ञासा-समाधान-59 के प्राण सम्बन्धी समाधान को लेकर है। समाधान पढ़ने से आपके अन्दर अनेक नई शंकाएं उत्पन्न हुई हैं। आपकी जिज्ञासा का समाधान लिखने से पहले हम यहाँ पाठकों के सुविधार्थ और आपके भ्रमनिवारणार्थ जो प्राणविषय में लिखा था, उसको ज्यों का त्यों यहाँ लिख रहे हैं।

''श्वास शरीर में प्राणवायु को लेने और छोड़ने का नाम है और शरीर को धारण करने वाली जीवनी शक्ति का नाम प्राण है। दोनों में अन्तर विशेष नहीं है, यदि अन्तर करना चाहें तो एक में वायु का लेना और छोड़ना क्रिया विशेष है, दूसरे में जीवनी शक्ति विशेष है। प्राण शब्द का भिन्न-भिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न अर्थ मिलता है। मुख्य रूप से शरीर को धारण करने वाला, जीवन का मूल शरीरस्थ वायु विशेष का नाम प्राण शब्द से रूढ़ हो गया है। प्राण शब्द के अन्य अनेक अर्थों में, परमात्मा, आत्मा, मन, इन्द्रियाँ, बल, ऊर्जा, शक्ति, सामर्थ्य, पिय व्यक्ति विशेष, चन्द्रमा, सोम, वरुण, अर्क (सूर्य), सविता, अमृत, यज्ञ का उद्गाता, सामवेद, भरत (धारण-पोषण करने वाला), वाचस्पति, रस, दीक्षा, पशु, मनुष्य, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ, समिध (अग्नि), प्राणे वै रेतः, रुद्र, वसिष्ठ (अतिशय रूप से धर्म कार्यों में बसने वाला), वाणी, स्वर (शब्द) आदि हैं। ये सब अपने-अपने स्थान पर प्राण तत्त्व हैं। जहाँ जिसका प्रसंग होगा वहाँ प्राण का अर्थ उसी आधार पर होगा।''

(परोपकारी, मार्च द्वितीय-2014)

(क) निश्चित रूप से प्राण जड़ है, चेतन नहीं। मैंने प्राण को कहीं चेतन नहीं लिखा है। आपने मेरे कौन-से वाक्यों से निकाला कि प्राण चेतन है? हाँ, मैंने शरीर को धारण करने हारी जीवनी (जीवन प्रदान करने वाली) शक्ति को प्राण कहा है, इससे आप समझ रहे हो कि मैंने प्राण को चेतन लिखा है, सो यह आपका सोचना उचित नहीं है। इस बात से प्राण चेतन सिद्ध नहीं हो रहा। **जैसे भूखे व्यक्ति के लिए भोजन जीवन देने वाला है, इस अवस्था में भोजन को लोग जीवन कह देते हैं, जीवनी शक्ति कह देते हैं,** ऐसा कहने से भोजन चेतन नहीं हो जाता, ऐसे ही प्राण के विषय में समझें। मैंने मुख्यरूप से शरीरस्थ वायु विशेष का नाम प्राण लिखा था, वायु चेतन तत्त्व नहीं है। इस बात से भी आप मेरे अभिप्राय को समझ सकते थे।

मैं प्राण को जड़ मानता हूँ, इसलिए केनोपनिषद् का प्रमाण देते हुए मुझसे पूछना कि केनोपनिषद् का ऋषि ऐसा क्यों कहता है....यह प्रश्न उससे पूछा जा सकता है, जो प्राण को चेतन मानता हो। वैसे भी प्रसंग प्राण का था, आपने इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि को और जोड़ दिया। इस बात को मैं भी स्वीकार करता हूँ कि इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और प्राण की पहुँच उस परमात्मा तक नहीं है, क्योंकि ये जड़ हैं। **ये सब उस परमात्मा तक पहुँचने में आत्मा के साधन अवश्य बनते हैं।** आप इस बात को अपनी कहकर लिखते, न कि केनोपनिषद् की, तो ठीक था, क्योंकि वहाँ केनोपनिषद् में बुद्धि और प्राण पढ़ा ही नहीं गया है। वहाँ तो –

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि। इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे।

(केन० 1.3)

(ख) प्राण जड़ है, शरीर में आयु विशेष प्राण है। वायु को प्रकृति तत्त्वों में गिना गया है। स्पर्श तन्मात्रा से वायु बना है, स्पर्श तन्मात्रा अहंकार से, अहंकार महतत्त्व से और महतत्त्व मूल प्रकृति से बना है। इसलिए यह कहना कि इसे प्रकृति तत्त्वों में क्यों नहीं गिना गया, कम जानकारी का द्योतक है।

क्रमशः अगले अंक में........

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 897. 'रामस्नेही' मत के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर-थोड़े दिन हुए कि एक 'रामस्नेही' मत शाहपुरा से चला है। उन्होंने सब वेदोक्त धर्म को छोड़कर राम-राम पुकारना अच्छा माना है। उसी में ज्ञान, ध्यान, मुक्ति मानते हैं। वे भी मूर्तिपूजा को धिक्कारते हैं, परन्तु आप स्वयं मूर्ति बन रहे हैं। स्त्रियों के संग में बहुत रहते हैं, क्योंकि रामजी को रामकी के बिना आनन्द ही नहीं मिल सकता।

प्रथम तो रामचरण आदि के ग्रन्थ देखने से विदित होता है कि यह ग्रामीण एक सादा सीधा मनुष्य था। न वह कुछ पढ़ा था, नहीं तो ऐसी गपड़चौथ क्यों लिखता? यह केवल इनको भ्रम है कि राम-राम कहने से कर्म छूट जाय। केवल ये अपना और दूसरों का जन्म खोते हैं।

इन लोगों ने अपना पेट भरने और दूसरों का भी जन्म नष्ट करने के लिए एक पाखण्ड खड़ा किया है। सो यह बड़ा आश्चर्य हम सुनते और देखते हैं कि नाम तो धरा 'रामस्नेही' और काम करते हैं 'रांडस्नेही' का। जहां देखो वहां रांड ही रांड संतों को घेर रही हैं।

अब दूसरी इनकी शाखा 'खेड़ापा' ग्राम मारवाड़ देश से चली है। उसका इतिहास है-एक रामदास नामक जाति का ढेढ चालाक था। उसकी दो स्त्रियां थीं। वह प्रथम बहुत दिन तक औघड़ होकर कुत्तों के साथ खाता रहा। पीछे वामी कुण्डापन्थी बना। पीछे 'रामदेव' का 'कामड़िया' बना। अपनी दोनों स्त्रियों के साथ गाता था। ऐसे घूमता-घूमता 'सीथल' में ढेढों का गुरु 'रामदास' था, उससे मिला। उसने उसको 'रामदेव' का पन्थ बताके अपना चेला बनाया। उस रामदास ने खेड़ापा ग्राम में जगह बनाई और इसका इधर मत चला।

जो श्वास और प्रश्वास के साथ राम-राम कहना बतावे, उसके सत्यगुरु कहते हैं और सत्यगुरु को परमेश्वर से भी बड़ा गुरु मानते हैं और उनकी मूर्ति का ध्यान करते हैं। साधुओं के चरण धो के पीते हैं। जब गुरु से चेला दूर जावे तो गुरु के नख और दाढ़ी के बाल अपने पास रख लेवे। उनका चरणामृत नित्य लेवे। रामदास और हररामदास के वाणी के पुस्तक को वेद से अधिक मानते हैं। उनकी परिक्रमा और आठ दण्डवत् प्रणाम करते हैं और जो गुरु समीप हो तो गुरु को दण्डवत् प्रणाम कर लेते हैं। स्त्री वा पुरुष को राम-राम एकसा ही मन्त्रोपदेश करते हैं और नामस्मरण से ही कल्याण मानते हैं, पुनः पढ़ने में पाप समझते हैं।

ऐसे-ऐसे पुस्तक बनाए हैं जिनमें स्त्री को पति की सेवा करने में पाप और गुरु-साधु की सेवा में धर्म बतलाते हैं। वर्णाश्रम को नहीं मानते। जो ब्राह्मण रामस्नेही न हो तो उसको नीच, और चाण्डाल रामस्नेही हो तो उसको उत्तम जानते हैं।

प्रश्न 898. गोसाईं मत कहाँ से और कैसे चला?

उत्तर-यह मत तैलंग देश से है, क्योंकि एक तैलंगी 'लक्ष्मणभट्ट' नामक ब्राह्मण ने विवाह कर किसी कारण से माता, पिता और स्त्री को छोड़ काशी में जाके संन्यास ले लिया था और झूठ बोला था कि मेरा विवाह नहीं हुआ। दैवयोग से उसके माता, पिता और स्त्री ने सुना कि काशी में संन्यासी हो गया है।

उसके माता, पिता और पत्नी ने काशी में पहुँचकर, जिसने उसको संन्यास दिया था उससे कहा कि 'इसको संन्यासी क्यों किया? देखो! इसकी यह युवती स्त्री है' और स्त्री ने कहा कि 'यदि आप मेरे पति को मेरे साथ न करें तो मुझको भी संन्यास दीजिए।' तब तो संन्यासी गुरु ने उसको बुला के कहा कि 'तू बड़ा मिथ्यावादी है। संन्यास छोड़ गृहाश्रम कर, क्योंकि तूने झूठ बोलकर संन्यास लिया।' उसने पुनः वैसा ही किया। संन्यास छोड़ उसके साथ हो लिया। देखो, इस मत का मूल ही झूठ-कपट से जमा। तब तैलंग देश में जाने पर उसको जोति में किसी ने न लिया, तब वे वहाँ से निकलकर घूमने लगे।

लक्ष्मणभट्ट और उसकी स्त्री ने एक लड़के को लेकर अपना पुत्र बना लिया। फिर काशी में जा रहे। जब वह लड़का बड़ा हुआ तब उसके माँ बाप का शरीर छूट गया। काशी में बाल्यावस्था से युवावस्था तक कुछ पढ़ता भी रहा, फिर और कहीं जाके एक विष्णुस्वामी के मन्दिर में चेला हो गया। वहाँ से कभी कुछ खटपट होने से काशी को फिर चला गया और संन्यास ले लिया। फिर कोई वैसा जाति बहिष्कृत ब्राह्मण काशी में रहता था। उसकी लड़की युवती थी। उसने इससे कहा कि 'तू संन्यास छोड़ मेरी लड़की से विवाह कर ले। वैसा ही हुआ। जिसके बाप ने जैसी लीला की थी वैसी पुत्र क्यों न करे? अपना प्रपञ्च अनेक प्रकार की छल-युक्तियों से फैलाने लगा और मिथ्या बातों की प्रसिद्धि करने लगा कि श्रीकृष्ण मुझको मिले और कहा कि जो गोलोक से दैवी जीव मृत्युलोक में आये हैं, उनको ब्रह्मसम्बन्ध आदि से पवित्र करके गोलोक में भेजो इत्यादि मूर्खों को प्रलोभन की बातें सुनाकर थोड़े से लोगों को अर्थात् चौरासी वैष्णव बनाये।'

मन्त्र का उपदेश करके शिष्य-शिष्याओं को समर्पण कराते हैं। इसी से स्त्री संग गुसाईं लोग बहुधा करते हैं। भला! देहेन्द्रिय, प्राणान्तःकरण और उसके धर्म, स्त्री, स्थान, पुत्र, प्राप्त धन का अर्पण कृष्ण को क्यों करना? क्योंकि कृष्ण पूर्णकाम होने से किसी के देहादि की इच्छा नहीं कर सकते और देहादि का अर्पण करना भी नहीं हो सकता क्योंकि देह के अर्पण से नखशिखाग्रपर्यन्त देह कहाता है। उसमें जो कुछ अच्छी-बुरी वस्तु हैं, मल-मूत्रादि का भी अर्पण कैसे कर सकोगे? और जो पाप-पुण्यरूप कर्म होते हैं, उनको कृष्णार्पण करने से उनके फलभागी भी कृष्ण ही होवें अर्थात् नाम तो कृष्ण का लेते हैं और समर्पण अपने लिए कराते हैं। जो देह में मलमूत्रादि है, वह भी गोसाईं जी के अर्पण क्यों नहीं होता? यह भी लिखा है कि गोसाईं जी के लिए अर्पण करना, अन्य मत वाले के लिए नहीं। यह सब स्वार्थपन के सिवाय कुछ नहीं है।

प्रश्न 899. गोसाईं मत कैसा है?

उत्तर-जो गोसाईं का चेला होता है, वह उसको सब पदार्थों का समर्पण करता है। जो समर्पण करने से गोसाईं के चेले-चेलियों के सब दोष निवृत्त हो जावें तो रोग-दारिद्र्यादि दुःखों से पीड़ित क्यों रहें? वे दोष प्रांच प्रकार के होते हैं- **एक**-सहज दोष जो कि 'स्वाभाविक' अर्थात् काम-क्रोधादि से उत्पन्न होते हैं। **दूसरे**-किसी देश-काल में नाना प्रकार के पाप किये जायें। **तीसरे**-लोक में जिनको भक्ष्याभक्ष्य कहते हैं और वेदोक्त जो कि मिथ्याभाषणादि है। **चौथे**-'संयोगज' जो कि बुरे संग से अर्थात् चोरी, जारी, माता, भगिनी, कन्या, पुत्रवधू, गुरुपत्नी आदि से संयोग करना। **पांचवें**-स्पर्शज अस्पर्शनीयों को स्पर्श करना। इन पांचों दोषों को गोसाईं लोगों के मत वाले कभी न मानें अर्थात् यथेष्टाचार करें।

गोसाईं जी के मत से भिन्न मार्ग के वाक्यमात्र को भी गोसाइयों के चेले-चेली कभी न सुनें, न ग्रहण करें, यही उनके शिष्यों का व्यवहार प्रसिद्धि है। अब देखिए! गोसाइयों का मत सब मतों से अधिक अपना प्रयोजन सिद्ध करने हारा है। भला इन गोसाइयों से कोई पूछे कि ब्रह्म का एक लक्षण भी तुम नहीं जानते, तो शिष्य-शिष्याओं का ब्रह्मसम्बन्ध कैसे करा सकोगे?

प्रश्न 900. गोसाईं लोग अपने सम्प्रदाय को 'पुष्टिमार्ग' क्यों कहते हैं?

उत्तर-ये गोसाईं लोग अपने सम्प्रदाय को 'पुष्टिमार्ग' कहते हैं। अर्थात् खाने, पीने, पुष्ट होने और सब स्त्रियों के संग यथेष्ट भोग-विलास करने को 'पुष्टिमार्ग' कहते हैं। परन्तु इनसे पूछना चाहिए कि जब बड़े दुःखदायी भगन्दरादि रोगग्रस्त होकर ऐसे झींक-झींक मरते हैं कि जिसको ये ही जानते होंगे। सच पूछो तो 'पुष्टिमार्ग' नहीं किन्तु 'कुष्ठिमार्ग' है। इसी प्रकार मिथ्याजाल रच के विचारे भोले-भाले मनुष्यों को जाल में फँसाया और अपने आपको श्रीकृष्ण मानकर सबके स्वामी बनते हैं। वाह जी वाह! भला तुम्हारा मत है!! गोसाइयों के जितने चेले हैं, ये सब गोपियां बन जावेंगी। अब विचारियो! भला जहाँ एक पुरुष और करोड़ों स्त्रियां एक के पीछे लगी हैं, उसके दुःख का क्या पारावार है? देखो! जैसे यहाँ गोसाईं जी अपने को श्रीकृष्ण मानते हैं और बहुत स्त्रियों के साथ लीला करने से भगन्दर तथा प्रमेहादि रोगों से पीड़ित होकर महादुःख भोगते हैं, अब कहिए जिनका स्वरूप गोसाईं पीड़ित होता है तो गोलोक का स्वामी श्रीकृष्ण इन रोगों से पीड़ित क्यों न होगा? और जो नहीं है तो उनका स्वरूप गोसाईं जी पीड़ित क्यों होते हैं?

क्रमशः अगले अंक में...

दिव्य मन

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

ओ३म् वयं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि॥

यह ऋग्वेद का मन्त्र है, जिसका अर्थ है–

हे सोमदेव, हे प्रभु, अपने शरीरों में मन को, मनःशक्ति को धारण किए हुए हम लोग तुम्हारे व्रत में हैं, तुम्हारे व्रत का पालन करते हैं और प्रजा सहित तुम्हारी सेवा करते रहें।

आइए आज हम इस मंत्र पर चिन्तन-मनन करते हैं। मन प्रभु के द्वारा दी गई अनमोल देन है जो हमारे लिए अमूल्य निधि है। इस मन के कारण ही हम मनुष्य हैं। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो मननशील है। मनन करने के कारण ही मनुष्य पशुओं आदि से ऊँचा है। अत एव मनुष्य ही कह सकता है कि हे प्रभु, हम मन को धारण किए हुए लोग तुम्हारे व्रतों का पालन करेंगे। व्रतों का पालन कठिन तो है परन्तु असम्भव नहीं है। असंभव होता तो कोई भी इस सृष्टि में व्रतों और नियमों का पालन न कर पाता। व्रत हैं, अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह और साथ ही पांच नियम हैं–शौच-संतोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान। यह सब जीवन जीने की सही पद्धति है, जो हमें योगदर्शन के ऋषि ने दी है। जो मनुष्य प्रलोभन के वश होकर व विपत्ति के समय भी अपने व्रत व नियम नहीं तोड़ते हैं, वे ही महान् बनते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि व्रतों व नियमों का पालन किसलिए किया जाए, तो उत्तर मिलता है, प्रभु की सेवा के लिए। प्रभु की सेवा क्या है? प्रभु के बनाए प्राणिमात्र की सेवा और उसके बनाए पंचभूत जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश की सेवा। प्राणिमात्र की सेवा तो चलो समझ आती है–दान, दया, परोपकार, कर्त्तव्य पालन आदि से हम कर सकते हैं, परन्तु पंचभूत की सेवा कैसे करें। जल, वायु, पृथ्वी आदि को प्रदूषित न करना ही उनकी सेवा है। अग्निहोत्र करें, वृक्षारोपण करें, पृथ्वी में, जल में कैमिकल्स न डालें। कई प्रकार के साधन हैं, प्रदूषण रोकने के। ये सब प्रभु की सेवा है।

मन्त्र कहता है प्रजावन्तः सचेमहि, अर्थात् मन की प्रजा भी सेवा में हो। अब मन की प्रजा कहाँ से आ गई? मन के बारे में तो हम सुनते आए हैं, परन्तु मन की प्रजा भी है, यह तो कभी सुना ही नहीं। इसके बारे में तो हमें पता ही नहीं। मन की प्रजा होती है रचनाशक्ति। कुछ क्रिएटिव करना ही मन की प्रजा है। ग्रंथ, भजन, लेख-उपदेश, रिसर्च, आविष्कार, परोपकार आदि जो भी ऐसे कार्य हैं, सब मन की प्रजा हैं। ये सब प्रभावशाली तभी होगा जब ऐसा करने वाले व्यक्ति के जीवन में कुछ व्रतों व नियमों का पालन होगा। ऋषि-मुनि दर्शनशास्त्र, उपनिषद् आदि के द्वारा, वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा, लेखक अपने लेखों व भजनों द्वारा, व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को निष्ठा व ईमानदारी द्वारा, प्रभु की सेवा करते रहते हैं। मनुष्य जाति का पथ-प्रदर्शन ही प्रभु सेवा है। ये सभी कार्य मन की शक्ति से ही सम्पन्न होते हैं। मन जो है वह सदैव आत्मा के साथ रहता है जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती, मनुष्य हो, चाहे पशु-पक्षी हों, मन सदा आत्मा के साथ होता ही है। एक दृष्टान्त है कि मन कैसे शक्ति भरी हुई है बस उसे जाग्रत करना है। एक राजा था। उसने बहुत युद्ध किए व विजय प्राप्त की। उसका एक बहुत ही प्रिय हाथी था जिसने सभी युद्धों में बढ़-चढ़कर भाग लिया व सदैव दुश्मन के विनाश का कारण बना। समय के साथ-साथ हाथी बूढ़ा हो गया। एक दिन राजा का वह हाथी कहीं पर घूमने गया व कीचड़ में फँस गया। थोड़ा प्रयत्न किया कीचड़ से बाहर आने का, परन्तु निकल न पाया। कुछ लोगों ने देखा तो हाथी के बारे में राजा को सूचित किया। कुछ सैनिक आए उसे निकालने के लिए और कहने लगे, इसे रस्सियों से बांधकर निकाला जा सकता है। इतने में राजा का मंत्री आ गया। मंत्री ने कहा, यह हाथी बूढ़ा है, रस्सी से तो इसकी खाल छिल जाएगी। फिर मंत्री ने एक आइडिया दिया कि यह हाथी बहुत सारे युद्धों में भाग ले चुका है, यदि युद्ध जैसी स्थिति बना दी जाये तो यह हाथी मन की दिव्य शक्ति जाग्रत होने से कीचड़ से बाहर आ सकता है। अब यह राजा का प्रिय हाथी था। कुछ सैनिक, कुछ घुड़सवार, कुछ अन्य हाथी ढोल-नगाड़े, मृदंग बाजे बजाते हुए, बिल्कुल युद्ध की स्थिति बना दी गई। उस हाथी ने एक जोरदार चिंघाड़ भरी,

एकदम से जोर लगाकर खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उस कीचड़ से बाहर आ गया। यह संभव हो पाया उसके मन की शक्ति जागृत हो जाने से।

हम सबके पास कोई न कोई कला, ज्ञान, विज्ञान, शक्ति छिपी हुई बैठी है, बस उसे जाग्रत करना है। एक और दृष्टान्त है कि एक माता जी को अधरंग हो गया। छह मास तक इलाज चलता रहा। डॉक्टर ने टैस्ट किये व कहा कि माता जी अब ठीक हैं। माता जी कहें कि मैं ठीक नहीं हूँ, मैं नहीं उठ सकती। कई दिन बीत गए। उनके परिवार ने सोचा क्यों न किसी संत-महात्मा से बात की जाए। परिवार ने एक महात्मा जी से बात कर सारी स्थिति बता दी। महात्मा जी सब समझ गए और कहा कल प्रात: 10 बजे माताजी को ले आना, वह ठीक हो जायेगी। परिवार के कुछ सदस्य माताजी को लेकर महात्मा जी के आश्रम पहुँचे। महात्मा जी ने लगभग 50 गज दूर माताजी को व्हील चेयर पर बैठा दिया और परिवार को कहा कि आप माताजी से 100 गज दूर जाकर खड़े हो जाएं। महात्मा जी ने कुछ मन्त्र पढ़ा और एक कमरे का दरवाजा खोल दिया जिसमें से 17 कुत्ते निकलकर माताजी की ओर दौड़े। माताजी ने देखा कि यह कुत्ते तो मुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे। वह उठकर अपने परिवार की ओर भागी। यह कैसे संभव हो पाया? माताजी की मन की दिव्य शक्ति जो सुषुप्ति में थी, जाग्रत हो उठी।

इसलिए वेद कहता है कि अपने मन को जगाओ और मृत्यु के पैर को धकेल दो। अमर हो जाओ, अमर पुत्र बनो। लेकिन हम अमर कैसे हो सकते हैं, शरीर तो मरणधर्मा है, यह तो अवश्य मरेगा, फिर हम अमर कैसे हों? वेद उत्तर देता है कि शुद्ध, पूत और यज्ञीय बनो। आहार, व्यायाम, तप द्वारा शरीर को शुद्ध और सुदृढ़ बनाओ और दीर्घ आयु को प्राप्त करो। दूसरा है पूत अर्थात् पवित्र। सत्वशुद्धि और सौमनस्य के द्वारा अपने अन्त:करण (मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार) को पूत अर्थात् पवित्र करो। सत्वशुद्धि यानि सतोगुण की वृद्धि करो, रजोगुण व तमोगुण को क्षीण करते जाओ। सौमनस्य यानि द्वेषरहित होते जाओ, प्राणिमात्र से प्रेम करो। तीसरा है यज्ञीय बनो यानि कि निष्काम भाव से शरीर व मन से परोपकार के कर्म करते जाओ।

इस प्रकार मनुष्य दीर्घायु होता है व कुछ क्रिएटिव कर जाने से अमर हो जाता है। जैसे मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, योगिराज श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक, कबीर, तुलसी, हनुमान्, कपिल, कणाद, पतंजलि, जनक, अशोक, शिवाजी, भगतसिंह, पटेल आदि न जाने कितने लोग अपने आपको अमर कर गये व अमर पुत्र बने। जितने भी मनुष्य अमर हुए हैं, उन सब का मन जाग्रत था। हमारा मन कैसा भी है उसे सत्संग, स्वाध्याय, जप, तप द्वारा बदला जा सकता है। एक कथानक है कि एक चोर था। एक दिन चोरी करके रात्रि के समय एक आश्रम में जा घुसा। वहाँ पर आश्रम के महात्मा जी ने उसे देख लिया और उससे पूछा तुम कौन हो, वह कहता है, मैं चोर हूँ। मुझे रात्रि में यहाँ रहना है, मेरे पीछे पुलिस लगी हुई है। महात्मा जी कहते हैं कि तुम चोर हो, यहाँ नहीं रह सकते, आश्रम की बदनामी होगी। चोर कहता है, आश्रम का मतलब ही आश्रय स्थल है, यहाँ आश्रय न मिलेगा तो कहाँ मिलेगा। ऐसा कहते-कहते वह वहाँ सो गया। महात्मा जी रात्रिभर सो न पाएं। प्रात:काल चोर को महात्मा जी ने जगाया और कहा कि अब चले जाओ। सत्संग प्रारम्भ होने वाला है, सत्संगी आयेंगे वरना आश्रम की बदनामी होगी। चोर कहता है अब तो मैं सत्संग सुने बिना नहीं जाऊँगा। प्रवचन बहुत प्रभावशाली था। प्रवचन समाप्त हुआ तो महात्मा जी ने कहा, अब तो जाओ। चोर कहता है अब तो बिल्कुल नहीं जाऊँगा। मैंने आज से चोरी छोड़ दी। सारी उमर पुलिस से भागता रहा, यहाँ तो शान्ति है, आनन्द है, सुख है। वह धीरे-धीरे आश्रम में सेवा करने लगा। महात्मा जी का सद्शिष्य बन गया। पूजा-पाठ-ध्यान-साधना-जप-तप उसके जीवन के अंग बन गए। अन्ततोगत्वा महात्मा जी ने उसके आचरण के मद्देनजर रखते हुए आश्रम की गुरुगद्दी उसे सौंप दी। सत्संग से उसका मन बदला और जीवन ने एक करवट ली और वह व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच गया।

हम भी अपने मन की शक्ति को पहचानें, इसे जाग्रत करें। यह दिव्य मन प्रभु की अनमोल देन है। हम शुद्ध पूत और यज्ञीय बनें और मृत्यु के पैर को धकेल कर अमरत्व प्राप्त करने का यत्न करें।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

डेरों का समर्थन काम न आया

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

पिछले हरयाणा विधानसभा चुनाव में लोगों ने भाजपा की जीत का कारण डेरा-समर्थन को बताया था। जब मैं कुछ बुद्धिजीवियों के मुख से ऐसी बात सुनता था तो मुझे

आश्चर्यमिश्रित दुःख होता था। ऐसी बातें आत्मविश्वास की कमी में कही जाती हैं। ऐसे डेरों का समर्थन लेने वालों में भी आत्मविश्वास की कमी होती है। दागी डेरों का समर्थन लेने वाले व उनके समर्थन से जीत की बात करने वाले, दोनों ही उस आमजन का अपमान करते हैं जो एक ईश्वर पर विश्वास रखकर मेहनत करता है। यही आमजन चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाता है। इस आमजन की संख्या को सुरक्षित रखना व उसे बढ़ाना आर्यसमाज का प्रमुख कर्त्तव्य है। इस आमजन की रक्षा और संवर्द्धन में ही लोकतंत्र की रक्षा व दृढ़ता है। पिछले चुनाव में डेरा प्रभावित सिरसा क्षेत्र में बीजेपी का बुरा हाल हुआ था, अबकी बार तंवर महोदय को मुंह की खानी पड़ी। एक और दिग्गज नेता जो पर्दे के पीछे से ऐसे ही नामधारी गुरु को पोषित करता रहा, उसका भी हश्र बहुत बुरा हुआ। हम कैसे भूल जाएँ कि चार आर्यों के बलिदान हुए, साधुओं व ब्रह्मचारियों की निर्मम पिटाई हुई, एक ईश्वर विश्वासी, मेहनतकश ग्रामीणों को गोलियों का निशाना बनाया गया और दूसरी ओर हथियारबन्द गुरु के गुर्गों को बड़ी सुरक्षा दी गई और वे लोग दुःस्साहस की हुंकार भरते रहे, संस्कृत व संस्कृति के रक्षकों का उपहास उड़ाते रहे। इसी दिग्गज नेता के प्रमुख समर्थक 'आरक्षण' के समय भी इस दागी गुरु को पोषित करने में लगे थे। ईश्वर के दूत, पूत और अवतार बनने की घोषणा करने वाले ये गुरु सिवाय अन्धविश्वास, अराजकता के और क्या दे सकते हैं? इन्हें वेद, उपनिषद्, दर्शन, देश के उत्तम इतिहास, शहीदों, राष्ट्रभाषा की उन्नति, गोरक्षा से क्या लेना?

बीजेपी को भी जहाँ इस घटनाक्रम से सबक लेना चाहिए, वहीं यदि उसके किसी नेता या कार्यकर्त्ता के मन में यह पाप बैठ गया है कि '35-1' के विभाजन से जीत हुई तो वह इस पाप को निकाल दे। बुद्धिजीवी भी इसे कारण मान, इस पाप को हवा न दें। यहाँ अवश्य ध्यान दें कि केवल '35' का ही स्वयंभू शुभचिंतक बनकर जिसने यह चुनाव लड़ा उसका तो जनता ने और बुरा हश्र किया। 'राष्ट्रवाद' का मुद्दा जिस समय हावी था उस समय मायावती-अखिलेश का गठबन्धन, इन दोनों के लिए और ममता बनर्जी के लिए मोदी को रोकने के लिए कांग्रेस प्यार लोगों को कैसे रास आता? जिस कांग्रेस के राज में केजरीवाल भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक बड़े आन्दोलन का बड़ा हिस्सा थे, वही केजरीवाल कांग्रेस से गठबन्धन की बात करे? मोदी जी ने अवसर पहचाना और 'महामिलावटी गठबन्धन' और 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' का नारा दिया। जनता ने मोदी जी के हक में फैसला दिया।

विधानसभा चुनाव आने वाले हैं। विधानसभा में यदि बीजेपी हार जाती है तो उसके हित जो उसके सिद्धान्तों में निहित है, वे राज्य में कभी सुरक्षित नहीं रह सकते फिर चाहे भले ही केन्द्र में स्वयं उन्हीं की सरकार क्यों न हो। गांव की ओर बड़े नेताओं का रुख, भीड़ जुटाने वाले क्षेत्रीय नेताओं, कार्यकर्त्ताओं को बढ़ावा, किसान से संवाद, कर्मचारियों से संवाद, महंगाई पर लगाम, टोल के नाम पर लूट पर अंकुश, युवाओं को रोजगारोन्मुख बनाने की योजनाएं आदि पर कार्य करना होगा। बीजेपी को प्रत्येक उस संगठन को प्रोत्साहन व बढ़ावा देना चाहिए जो वेद, राष्ट्रभाषा हिन्दी, गाय, संस्कृत, सदाचार के संरक्षण व पोषण की बात करता है। ये सब राष्ट्र की संस्कृति के मूलबिन्दु हैं। आर्यसमाज के भजनोपदेशकों के सिवाय इस दिशा में और कौन कार्य करता है? इन उपदेशक मण्डलियों को 'लोकसंपर्क विभाग' की भांति मान्यता देकर वेतन देना सरकार का परम कर्त्तव्य है। यह सहायता 'भक्त फूलसिंह विश्वविद्यालय' जैसी संस्थाओं में उपदेशक पीठ स्थापित करके भी की जा सकती हैं। ऐसी संस्थाएं या तो ठगाई गई या ठग ली गई। आर्यसमाज को क्या मिला? अन्त में सभी राजनीतिक पार्टियों से निवेदन है कि समाज को बांटने की चाल न चलें। भारतवर्ष की जनता प्रतीक्षा में है कि अनुच्छेद 370 कब हटाया जाएगा?

अमूल्य शिक्षा

1. बहुत ही कम प्रतिज्ञायें करो।
2. हमेशा सच बोलो।
3. किसी की निन्दा मत करो। (सत्य बोलना निन्दा नहीं झूठ बोलना निन्दा होती है)।
4. अच्छे पुरुषों का संग करो, नहीं तो अकेले ही रहो।
5. जीवन को नियमित रखो।
6. जूआ मत खेलो।
7. मादक (नशीली) वस्तुओं का सेवन मत करो।
8. उत्तम संग और मधुर भाषण सद्‌गुणों के स्तम्भ हैं।
9. आमदनी से सदा कम खर्च करो।
10. जहाँ तक हो सके ऋण मत करो।

सद्‌विचार

1. सदाचार ही सबसे बड़ी शिक्षा है।
2. शिक्षा वही है जो जीवन का विकास करे।
3. गुरु चरणों में ही सच्चा ज्ञान है।
4. संसार में कुछ भी असंभव नहीं है।
5. त्याग से ही सच्चा सुख मिलता है।
6. परोपकार में सबसे आगे रहो।
7. अच्छी सन्तान ही माता-पिता के लिए गौरव है।
8. लक्ष्य से विचलित न होवो।
9. सदा सत्य बोलो, धर्म करो, अच्छे काम करो।
10. ईश्वर को सामने रखकर कर्म करो, फल की चिन्ता मत करो।
11. ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।
12. मन पर विजय पाने वाला ही वास्तव में पुरुष है।
13. जिसको अपने आप पर विश्वास नहीं है वह नास्तिक है।

टेक-कभी नहीं सोचा तूने बैठ के अकेले में,
कौन तेरा, तू है किसका, दुनिया के मेले में।

1. कौन साथ आया तेरे, कौन साथ जायेगा।
लाया था क्या, ले जाएगा, डाल करके थैले में।
2. क्या किसी से लिया तूने क्या किसी को दे दिया,
जीवन ही समाप्त किया, इसी दे दे ले ले में।
3. सुख-दुःख, हानि-लाभ, शोक-हर्ष, जीत-हार,
यही दो उपलब्धियाँ हैं, जगत् के झमेले में।
4. जीवन का उद्देश्य यदि 'प्रेमी' नहीं जाना तू,
हीरा जन्म लुटा दिया फूटी कौड़ी धेले में।

ईश्वर समर्पण वाक्य

हे परमेश्वर आप सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् तथा न्यायकारी हैं। आपने ही मुझे यह जीवन प्रदान किया है। आपके कारण ही मैं विचारने, बोलने तथा कर्मों को करने में समर्थ हूँ। प्रत्येक क्षण मन, वाणी और शरीर से किये जाने वाले समस्त कर्मों को जानते हैं। आपसे छुप करके मैं कोई भी काम नहीं कर सकता। आपकी अनुभूति मेरी बुद्धि में प्रत्येक क्षण बनी रहे जिससे मैं बुरे कामों से और उनके दुःख रूप फल से बचकर सुख-शान्ति को प्राप्त करूँ। ऐसी आपसे प्रार्थना है।

प्रेरक वचन

- स्वयं को अत्यधिक ज्ञानी समझना असल में अज्ञानता की निशानी है।
- विनम्रता सभी सद्‌गुणों का आधार है।
- दुनिया में कोई भी चीज लगन की जगह नहीं ले सकती।
- दुनिया को बदलने के लिए शिक्षा सबसे सशक्त माध्यम है।
- सफलता के लिए श्रम से बड़ा साधन कोई और नहीं।
- जंग केवल हथियारों से नहीं, हौसले से भी लड़ी जाती है।
- अंतहीन महत्त्वाकांक्षाएं प्राप्त उपलब्धियों का आनन्द लेने से भी रोकती हैं।
- प्रतिभा तमाम लोगों में होती है लेकिन कम ही लोग उसे पहचान पाते हैं।
- ईर्ष्या ऐसी आग है जो जीवन को भस्म कर देती है।
- मोहमाया खत्म होने पर ही सत्य के प्रति आकर्षण बढ़ता है।
- क्रोध के बाद सिर्फ ग्लानि का अनुभव होता है।
- जो हृदय प्रेम करता है, हमेशा युवा रहता है।
- चीजें नहीं बदलती हैं, बदलते हम हैं।
- हिंसा के साथ ही किसी मसले पर वाजिब हक भी खत्म हो जाता है। –भलेराम आर्य (रोहतक)

सत्संग महिमा

❑ कु० रविता आर्या सुपुत्री श्रीओ३म् आर्य, गोयला कलां, जिला झज्जर, मो० 9416662447

सत्संग-सतां संगः सत्संगः, सद्भिर्वा संगः अर्थात् सज्जन पुरुषों का या सज्जन पुरुषों से संग-समागम करना चाहिए। उनके मनोहर उपदेश सुनना और उन पर आचरण कर ब्रह्मचर्यादि उत्तम व्रतों का पालन करना चाहिए।

हमारे शास्त्र सत्संग की महिमा से भरे पड़े हैं। सज्जनों का संग करने से हमारे जीवन में पवित्रता आएगी, जिससे हम अपने वास्तविक उद्देश्य की ओर अग्रसर हो सकेंगे। सत्संग की महिमा अपार है। किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है-

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः॥

अर्थात् संसार में चन्दन को शीतल माना जाता है। चन्द्रमा की सौम्य किरणें तो उसको भी अधिक शीतलतर है। किन्तु चन्दन और चन्द्रमा से भी अधिक शीतलतम साधु-संगति=साधु महात्माओं का सत्संग है।

अथर्ववेद में उत्तम और अधम पुरुषों के संग का वर्णन करते हुए बतलाया है-

दूरे पूर्णेन वसति दूरे ऊनेन हीयते।
महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये तस्मै बलि राष्ट्रभृतो भरन्ति॥

अर्थात् उत्तम के साथ रहने से (दूरे वसति) सामान्य जनों से दूर रहता है। (ऊनेन) हीन के साथ रहने से भी (दूरे हीयते) पतित हो जाता है। (भुवनस्य मध्ये) सब लोक-लोकान्तरों में एक सबसे बड़ा पूजनीय देव परमात्मा है (तस्मै) उसी के लिए (राष्ट्रभृतः भरन्ति) राष्ट्र को धारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुष बलि अर्पण करते हैं।

यद्यपि दूर तो दोनों ही होते हैं, परन्तु उत्तम का संग करने वाला आदरणीय तथा अधम का साथी निन्दनीय होता है। आचार्य चाणक्य ने तो दुर्जनों को सर्प से भयंकर बतलाया है-

सर्पश्च दुर्जनश्चैव वरं सर्प्पो न दुर्जनः।
सर्पो दशति काले दुर्जनस्तु पदे-पदे॥

अर्थात् सर्प और दुर्जन में से सर्प ही अच्छा है क्योंकि सर्प तो काल आने पर काटता है लेकिन दुर्जन तो पग-पग पर प्रहार करता है।

दुष्टों की मैत्री कभी स्थिर नहीं रहती। विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र में कहा है-

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वी पुरा बुद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना,
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥

अर्थात् दुर्जनों की मित्रता आरम्भ में बहुत बड़ी होती है, किन्तु उत्तरोत्तर घटती ही जाती है, जैसे-प्रातःकाल छाया बहुत बड़ी होती है, किन्तु दोपहर तक कम होकर न्यूनतम रह जाती है। इसके विपरीत सज्जनों की मित्रता आरम्भ में नाममात्र होती है, किन्तु उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसलिए दुर्जनों की मित्रता को प्रारम्भ में फूला-फूला देखकर उसमें फँसना नहीं चाहिए। अतः हमेशा सज्जनों का संग करना चाहिए। क्योंकि-

मलयाचलगन्धनेन त्विन्धनं चन्दनायते।
तथा सज्जनसंगेन दुर्जनः सज्जनायते॥

अर्थात् जैसे मलयाचल चन्दन के पर्वत पर निकट का इंधन भी चन्दन बन जाता है, उसमें भी चन्दन जैसी सुगन्ध आने लगती है, ठीक उसी प्रकार सज्जनों की संगति से दुर्जन भी सज्जन बन जाते हैं।

'जैसा संग वैसा रंग' कहावत के अनुसार सत्संग करने से मनुष्य श्रेष्ठ बन जाता है और कुसंग में पड़कर अधम बन जाता है। संग का रंग अवश्य चढ़ता है।

कुछ दृष्टान्त देखिए जिन्होंने सत्संग को पाकर पुनः सन्मार्ग को ग्रहण किया।

नास्तिक मुंशीराम वकील बरेली में महर्षि दयानन्द जी के सत्संग में सम्मिलित हुआ था। वह उस समय सभी मर्यादाओं से पराङ्मुख हो चुका था, किन्तु महर्षि के उपदेशो का इतना गहरा प्रभाव हुआ कि वह नास्तिक मुंशीराम के स्थान पर ईश्वर का श्रद्धालु भक्त वीर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द बन गया।

इसी तरह एक दिन महर्षि दयाननद जी को अमीचन्द ने एक गीत सुनाया। उसके गीत को सुनकर ऋषि अत्यन्त

शेष पृष्ठ 16 पर....

ऋषि दयानन्द ने सत्यधर्म और हमारे कर्तव्यों से परिचय कराया

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महाभारत युद्ध के बाद देश के विद्वानों व सामान्य लोगों ने सत्य मत और अपने कर्तव्यों को भूलना आरम्भ कर दिया था। ऋषि दयानन्द (1825-1883) के समय में

देश-विदेश में लोग सत्य और आध्यात्मिक एवं भौतिक जगत् का आधार तीन मूल सत्ताओं के वास्तविक स्वरूप सहित अपने कर्तव्यों को प्रायः भूल चुके थे। किसी भी मत-मतान्तर में तीन अनादि वा मूल पदार्थ ईश्वर, जीव और प्रकृति का सत्यस्वरूप यथारूप में नहीं पाया जाता। यह मत-मतान्तर वाले विज्ञान की भांति समय-समय पर अपने ज्ञान को अपडेट भी नहीं करते। इस कारण इनमें अनेक प्रकार के परिवर्तनों एवं संशोधनों की आवश्यकता बन गई है। दूसरी ओर सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों की अमैथुनी सृष्टि हुई थी। सभी मनुष्य युवावस्था में उत्पन्न हुए थे। अमैथुनी का तात्पर्य है कि बिना माता-पिता के मनुष्य आदि प्राणियों की सृष्टि वा जन्म हुआ था जिसे ईश्वर ने पृथिवी माता के गर्भ से उत्पन्न किया था। इन स्त्री-पुरुषों के न तो माता-पिता थे और न ही उस समय आचार्य व अध्यापक ही थे। ऐसे समय में प्रथम आचार्य के रूप में ईश्वर ने आदि चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान ईश्वर ने ऋषियों की आत्मा में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से वा सब प्राणियों की आत्मा के भीतर विद्यमान होने से आत्मा में प्रेरणा करके उत्पन्न किया था। वर्तमान संसार में हम आचार्यों के उपदेशों को आंखों को बन्द करके सुन सकते हैं। वह ज्ञान आत्मा तक कानों से मन में व मन से आत्मा में पहुंचता हैं। आचार्य बाहर है भीतर नहीं है। परमात्मा बाहर भी है आत्मा के भीतर अर्थात् सर्वान्तर्यामी है। अतः जो काम अध्यापक व आचार्य बोल कर करता है वही काम ईश्वर अपने आत्मस्थ वा सर्वान्तर्यामी स्वरूप से आत्मा में प्रेरणा करके कर देता है। इसमें असम्भव व आश्चर्य की बात नहीं है।

ऋषि दयानन्द ने महाभारत के बाद आरम्भ अविद्या से उत्पन्न अन्धकार के युग में वेदों पर आधारित सत्य ज्ञान का प्रचार कर लोगों की अविद्या दूर करने सहित ईश्वर व जीवात्मा विषयक सत्यज्ञान के स्वरूप से परिचय कराया था। उन्होंने संसार को ईश्वर की उपासना की सर्वोत्तम विधि भी सिखाई है। यद्यपि उनके समय में वेद और योगदर्शन आदि ग्रन्थ विद्यमान थे परन्तु इनके सत्य अर्थों से युक्त हिन्दी आदि सरल भाषाओं में टीकायें व भाष्य नहीं मिलते थे। ऋषि व उनके अनुवर्ती आर्य विद्वानों ने लोगों तक वेदों, दर्शनों व उपनिषदों के सत्यार्थों को पहुंचाया जिससे वह ईश्वर के साथ अपना सेवक-स्वामी तथा व्याप्य-व्यापक का सम्बन्ध जान सके व उसे स्थापित कर सके। उन्हीं के कारण लोगों ने जड़पूजा वा पाषाण आदि पूजा को छोड़कर ईश्वर के सत्यस्वरूप के उपासक बनें। इसमें कुछ प्रमुख नाम बताने हों तो हम स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं० लेखराम जी, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज जी तथा स्वामी दर्शनानन्द आदि के नामों का उल्लेख करेंगे। यदि ऋषि दयानन्द जी न आते और वेदों का प्रचार न करते तो लोगों को यह ज्ञात ही नहीं होता कि मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध एवं हानिकारक कार्य है। इससे ईश्वर की आज्ञा भंग होने का पाप लगता है। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द ने हमें अवतारवाद, ईश्वर पुत्र व ईश्वर के सन्देशवाहक जैसे विचारों व मान्यताओं का भी सत्यस्वरूप प्रस्तुत कर इन मान्यताओं की निरर्थकता को प्रस्तुत कर मानवता का बहुत बड़ा उपकार किया है। समाज में व्याप्त बुराइयों का प्रचलन भी धार्मिक मान्यताओं व सिद्धान्तों से आरम्भ परम्पराओं से जुड़ा हुआ था। स्त्री व शूद्रों को वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं था। कल्पित संस्कृत वचनों का उदाहरण देकर वेदाध्ययन का विरोध किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने यजुर्वेद के मन्त्र 26/2 को प्रस्तुत कर हजारों वर्षों से चली आ रही इस अवैदिक प्रथा का पटाक्षेप कर दिया। यजुर्वेद का मन्त्र और उसका भावार्थ निम्न है-

''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु॥''

इस मन्त्र का हिन्दी अर्थ व भावार्थ है कि 'मैं ईश्वर

जैसे इस कल्याणप्रद वेदवाणी को सब मनुष्यों के लिए सम्यक् रीति से कहता हूं अर्थात् ब्राह्मण-क्षत्रिय दोनों के लिए, शूद्र के लिए और वैश्य के लिए, अपने लोगों के लिए और पराये अर्थात् शत्रु के लिए, उसी प्रकार मनुष्यमात्र को मेरे इस कार्य का अनुकरण करना चाहिए (अर्थात् अन्य सभी मनुष्यों में प्रचार करना चाहिए)। ऐसा कर्तव्य पालन करनेवाला (अर्थात् वेद व वेद की मान्यताओं का प्रचार करने वाला) मनुष्य ऐसी प्रार्थना कर सकेगा कि मैं देवों (देव विद्वानों को कहते है, ईश्वर महादेव है, उन) का प्रिय हो जाऊं। इसी लोक या जीवन में मैं दक्षिणा (वेदज्ञान, शिक्षा व विद्या) के देने वालों का प्रिय हो जाऊं। मेरी यह कामना पूरी हो। यह मेरा पुत्र या उत्तराधिकारी (वेदों का प्रचार करने वाला) मुझको प्यारा हो जाए।

ऋषि दयानन्द द्वारा इस मन्त्र व उसके अर्थ को प्रस्तुत करने से स्त्री व शूद्रों पर वेदाध्ययन पर लगी रोक समाप्त हो गई। ऋषि ने पौराणिक सनातनियों की असत्य व हानिकारक धारणा पर इस मन्त्र द्वारा लगी रोक के हटने का परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में कन्याओं एवं दलित बन्धुओं के आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुलों में अध्ययन करने का अवसर मिला और वह वेदों के उच्च कोटि के विद्वान व प्रचारक बनें। ऋषि दयानन्द जी का यह योगदान भी कोई कम महान नहीं है। उन्होंने पूरी मानव जाति को वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया है जिसके लिये सभी लोग उनके चिरऋणी है। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिखकर भी उन्होंने हमें प्राय: सभी धार्मिक, सामाजिक व देश में सुशासन करने का सत्य ज्ञान प्रदान किया है। मत-मतान्तरों की जो समीक्षा सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्ध के चार सम्मुलासों में की गई है उससे भी हमें सत्य मत के निर्णय करने में सहायता मिलती है और वेद मत ही सत्य मत है तथा वह मनुष्य की उन्नति व लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है, यह सुस्पष्ट होता है। महाभारत के बाद देश के लोगों में जन्मना-जातिवाद की बुराई फैली थी। इसका भी खण्डन ऋषि दयानन्द जी ने वेद प्रमाणों व वेद की अन्तर्निहित भावना के आधार पर किया है। वेद गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार सामाजिक वर्ण-व्यवस्था को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हैं। जन्मना जातिवाद वेद विरुद्ध है और यह देश व समाज को संगठित व उन्नत करने के स्थान पर उसे कमजोर करता है। इस बुराई के कारण जन्मना जातिवाद पूर्णत: त्याज्य है। ऐसे प्राय: सभी विषयों का सत्य ज्ञान ऋषि दयानन्द जी ने विश्व को दिया है और इसी के लिये उन्हें अपने प्राणों की आहुति वैदिक राष्ट्रयज्ञ व समाज सुधार आन्दोलन में देनी पड़ी है।

ऋषि दयानन्द ने वैदिक सत्यधर्म एवं वेदों के स्वाध्याय, वेदाचरण तथा ईश्वरोपासना सहित परोपकार आदि कर्तव्यों का बोध कराने के साथ पराधीन भारत में परतन्त्रता के कारणों को बता कर देश की स्वतन्त्रता की नींव भी रखी थी। उनके समय व उससे पूर्व देश की आजादी का विचार किसी पुस्तक व महापुरुष ने प्रचारित नहीं किया था। देश को जगाने और स्वतन्त्रता प्राप्त करने का विचार भी ऋषि दयानन्द ने ही हमें दिया था। सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में स्वन्तत्रता के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने लिखा है **'कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।'** इस वाक्य को हम देश को आजाद कराने की प्रेरणा मानते हैं। इसे पढ़कर ऋषि दयानन्द जी के अनुयायियों को देश को आजाद कराने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी। अपने इस वाक्य को जारी रखते हुए वह आगे कहते हैं कि **'अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'** इन शब्दों में स्वामी दयानन्द जी ने महारानी विक्टोरिया द्वारा देश व उसके नागरिकों को दिये वचनों का भी शब्दश: खण्डन कर स्वदेशी राज्य को ही पूर्ण सुखदायक बताया है। यह शब्द ऋषि दयानन्द द्वारा सन् 1883 में लिखे गये थे जिनका प्रकाशन उनकी मृत्यु के बाद सन् 1884 में हुआ था। कांग्रेस की स्थापना इसके एक वर्ष बाद सन् 1885 में हुई थी। ऋषि के इन शब्दों के कारण ही वह आजादी के आन्दोलन के पितामह एवं आजादी के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले प्रथम महापुरुष वा शहीद कहे जा सकते हैं।

ऋषि दयानन्द को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने देश के लोगों को सबसे पहले सत्य, सत्यधर्म वेद, मनुष्य के कर्तव्यों सहित ईश्वर, जीवात्मा और सामाजिक व्यवस्था के सत्य स्वरूप से परिचित कराया था। यदि वह न आते तो हम व देश उनसे प्राप्त ज्ञान व प्रेरणाओं से वंचित रहता। ऋषि दयानन्द का देश में जन्म लेना देश का परम सौभाग्य था। उनका कोटिश: धन्यवाद और उनको सादर नमन है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से नियमानुसार

सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

सेवा में,

माननीय श्री प्रधान/मन्त्री जी एवं सभा से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाज, हरयाणा

विषय : सभा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) एवं प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम व शुल्क विवरण।

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2019 में होना प्रस्तावित है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आगामी 3 वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमों के अनुसार और सभा के संविधान के अनुसार चुनकर, प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनांक 20 जुलाई 2019 तक सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में अवश्य भेज देवें, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सकें।

प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम

1. प्रत्येक आर्यसमाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के साथ कम से कम दो वर्ष से सम्बन्धित हों अर्थात् 15 जुलाई 2019 तक जिसके दो वर्ष पूरे हो चुके और प्राप्तव्य दशांश तथा वेदप्रचार के लिए प्रतिवर्ष कम से कम 1000/- रुपये अथवा अधिक देता हो, को अधिकार होगा कि वह अपने **प्रथम 11 आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा अगले प्रति 20 आर्य सभासदों** (जिनका नाम उस आर्यसमाज की पंजिका में प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों की नियुक्ति तिथि से पूर्व दो वर्ष से अंकित रहे हों और यदि वे शुल्क देने वाले सभासद् हों तो उन्होंने पूरे दो वर्षों का शुल्क आर्यसमाज के उपनियम संख्या-4 के अनुसार दिया हो) **पर एक प्रतिनिधि भेज सकेगा। प्रतिनिधि फार्म के साथ 2 नवीनतम फोटो पासपोर्ट साइज के साथ भेजें,** जिसके पीछे प्रतिनिधि का नाम व विवरण लिखा हुआ होना चाहिये। प्रत्येक प्रतिनिधि का पहचान-पत्र भी जारी किया जाएगा।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा द्वारा दिनांक 06.04.2019 को पारित प्रस्ताव संख्या-4 के अनुसार सभा के संविधान अनुसार, नियमानुसार सभा से सम्बद्ध सक्रिय आर्यसमाजें चुनाव प्रक्रिया में भाग लें सकेंगी।
3. नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ **'आर्य प्रतिनिधि'** पत्रिका का शुल्क 200 रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष 2016-2017, 2017-2018, 2018-2019 का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।

शुल्क विवरण

4. आर्य सभासद् वे होते हैं जिनका नाम किसी आर्यसमाज की पुस्तक पर सदाचारपूर्वक दो वर्ष से अंकित रहा हो, शतांश के अनुसार सभासदों की आय के हिसाब से समाज को शुल्क देते रहे हों और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम 25 प्रतिशत हो। (यदि अन्तरंग सभा में किसी कारण से उनका शुल्क माफ न कर दिया गया हो या उपस्थिति के नियम को शिथिल न कर दिया हो)। अनिश्चय की स्थिति में सभा का निश्चय यह है-

वेदप्रचार	दशांश	आर्य प्रतिनिधि (पाक्षिक पत्रिका)
1000/-	आय का शतांश या न्यूनतम	200/-

1. सभी सभासदों से उनकी आय का शतांश प्राप्त करें अथवा जो सभासद् नौकरी (प्रथम श्रेणी) अधिक आय वाले, डॉक्टर, वकील, उद्योगपति, इंजीनियर आदि से आर्यसमाज के नियम-उपनियम के अनुसार उनकी आय का शतांश अथवा 1000/- रुपये वाृषक शुल्क लें।

2. जो सभासद् नौकरी क्लास-II व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले, बड़े दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 20/- रुपये मासिक शुल्क लें।
3. जो सभासद् नौकरी क्लास-III व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले पत्रकार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 15/- रुपये मासिक शुल्क लें।
4. जो सभासद् पैंशनर, नौकरी क्लास-IV व समकक्ष आय वर्ग वाले, छोटे दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 10/- रुपये मासिक शुल्क लें।
5. जो सभासद् छात्र, बेरोजगार, गृहिणी, मिस्त्री, मजदूर, कृषक, समाजसेवी, आश्रित आदि से न्यूनतम 5/- रुपये मासिक शुल्क लें।
6. **स्थानीय आर्यसमाज द्वारा चुने जाने वाले प्रतिनिधि सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क वार्षिक के स्थान पर तीन वर्ष का वार्षिक प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क सभा को अग्रिम भेजें।**

5. **चुने जाने वाले प्रतिनिधि की आयु 21 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए और प्रतिनिधि-फार्म पर छपे प्रतिज्ञा-पत्र पर प्रतिनिधि के हस्ताक्षर एवं उसका पूरा पता एवं फोन नंबर फार्म में लिखना जरूरी है।**
6. प्रतिनिधियों का निर्वाचन अन्तरंग सभा में आर्य सभासद् सर्वसम्मति से या बहुमतानुसार करेंगे परन्तु वह प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किया जाएगा जो किसी ऐसे आर्यसमाज का सभासद् हो जिसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ न हो अथवा जिसने सभा के विरुद्ध कोई वाद उत्पन्न किया हो या अनुशासनहीनता की हो।
7. नया प्रतिनिधि फार्म भेजते समय और प्रतिनिधियों के प्रत्येक चुनाव के अवसर पर जो सभा को प्रार्थना पत्र भेजा जाए उसके साथ आर्यसभासद् होने का निश्चय-पत्र, शुल्क देने और सदाचार•व विश्वास रखने का प्रतिज्ञा-पत्र संलग्न होना आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिवेशन में कोई प्रतिनिधि तब तक सम्मिलित न हो सकेगा जब तक उसका निश्चय-पत्र और प्रतिज्ञा-पत्र नियमानुसार सभा के पास न पहुंच चुका हो, जिस समाज का वह प्रतिनिधि हो उससे वेदप्रचार, दशांश तथा 'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका शुल्क की राशि प्राप्त न हो चुकी हो।
8. प्रत्येक आर्यसमाज अपने सदस्यों के शुल्क की आय का दशांश प्रतिवर्ष सभा के कोष में भेजेगा (सभा के विधान की धारा 9 नियम एवं नियमावली)।
9. भरे हुए प्रतिनिधि फार्म की एक नकल अपने आर्यसमाज के रिकार्ड के लिए अवश्य रखनी चाहिए। आवश्यकतानुसार खाली प्रतिनिधि फार्म की फोटो कापी करा लें।
10. वही फार्म स्वीकार किये जायेंगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेंगे।
11. **प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय से कार्य दिवसों में कभी भी प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रतिनिधि फार्म सभा की Website : www.apsharyana.org पर भी उपलब्ध है।**

नोट-हरयाणा सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार आर्यसमाजें वेदप्रचार, दशांश, पत्रिका शुल्क व प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क की समस्त राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें। धन्यवाद।

दिनांक : 05.05.2019 —उमेद **शर्मा**, सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक से सम्बद्ध समस्त हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सभा का त्रिवार्षिक निर्वाचन दिसम्बर 2019 में होना प्रस्तावित है। त्रिवार्षिक चुनाव के लिए आर्यसमाजों को अपने प्रतिनिधि फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 20 जुलाई 2019 निश्चित की गई है। प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय से कार्य-दिवसों में कभी भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

विस्तृत जानकारी सभा की

Website : www.apsharyana.org पर देखें।

दिनांक : 05.05.2019 —उमेद शर्मा, सभामन्त्री

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (वीर भवन) पानीपत का दसवीं व बारहवीं का परीक्षा परिणाम शानदार रहा

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत का कक्षा दसवी तथा बारहवीं का मार्च 2019 का वार्षिक परिणाम निम्न प्रकार रहा-

कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम

कुल विद्यार्थी-81, मैरिट आई-16, प्रथम श्रेणी-50

कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम

कुल विद्यार्थी-36, मैरिट आई-13, प्रथम श्रेणी-36

उपरोक्त विद्यालय का सत्र 2018-19 का परीक्षा परिणाम (10वीं, 12वीं) शानदार एवं उत्साहवर्धक रहने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्थानीय प्रबन्धक समिति, प्रिंसिपल एवं अध्यापकों को शुभ कामनाएं एवं बधाई देती है। आशा है कि आगामी वर्ष में और अधिक परिश्रम कर परीक्षा परिणाम को और अधिक शानदार करेंगे।

—सभाप्रधान

आर्य वीर एवं आर्य वीरांगना संस्कार चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (आर्य वीरों के लिए) स्वामी श्रद्धानन्द ग्लोबल स्कूल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एरिया, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद (आर्य वीरांगनाओं के लिए)। शिविर उद्घाटन-2 जून, 2019 रविवार, सायं 4.00 बजे। समापन समारोह-9 जून, 2019 रविवार, सायं 8.00 बजे

संपर्क सूत्र-

(1) प्राचार्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ 9811687124,
(2) मंडलपति, आर्य वीर दल, 9911003372

चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर

वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम की ओर से चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर, दिनांक 26 मई से 2 जून 2019 तक महर्षि दयानन्द सीनियर एकेण्ड्री स्कूल, ग्राम माकड़ौला, जिला गुरुग्राम में आयोजन किया जा रहा है। निवेदक—के.सी. सैनी, प्रधान जिला वेदप्रचार मण्डल, गुरुग्राम

भजन (तर्ज-तेरी दुनिया से दूर)

टेक-जपो नित्य ओ३म् नाम, सुबह शाम,
कटज्यां सबके कष्ट तमाम।
रहे ना दुखिया कोए नरनार॥

1. परमदेव परमेश्वर पर चाहिये सबने विश्वास-
चाहिये सबने विश्वास।
भक्ति करणी, पार उतरणी हो मन में प्रकाश,
यहाँ हो सत्पुरुषों का वास।
नाश दुष्टों का करो जगत् से, हमेशा करना प्यार भक्त से।
ऐसा करते रहो उपकार॥

2. हिन्दुस्तां में जातपात के जो बन्धन हैं उन्हें तोड़ो।
ऊँच-नीच का भेद मिटा मानव से मानव जोड़ो।
शीश इस छुआछूत का फोड़ो, छोड़ो जग की सभी बुराई,
समझो आपस में सब भाई, सबकी हो ज्या जयजयकार॥

3. शील वचन संतोष धारकर ईश्वर का चाहिए शरणा।
घूम-घूमकर संदेश फैलाओ सदा बुरे कर्म से डरना।
आदर सत्पुरुषों का करना।
मरना सीखो जिसने जीना-अपना रहो तानकर सीना।
पाप से मत ना मानो हार॥

4. योगी और विद्वानों का जग में करते रहो सम्मान।
गऊमाता के पालन से हो ज्यागा सबका कल्याण।
कहे गोरक्षा नन्द विद्वान्।
ध्यान सच्चे ईश्वर में लाओ सदा सत्य की कविताई गाओ।
सुनो रामेश्वर का प्रचार॥

—रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक, तारखा वाले,
प्रधान आर्यसमाज उचाना मण्डी, जिला जीन्द
मोबाइल नं० 9416955090, 8295500985

गार्गी आर्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया

पं० रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक प्रधान आर्यसमाज उचाना मण्डी जिला जीन्द तारखा वाले की सुपौत्री व सुनीलदत्त शास्त्री की सुपुत्री कुमारी गार्गी आर्या ने हरियाणा शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा में श्री शिव मन्दिर सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल उचाना मण्डी में 94.2 अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। मैं, मेरे दादा-दादी, माता-पिता व गुरुजनों का आभार प्रकट करती हूँ। —कुमारी गार्गी आर्या

सत्संग महिमा..... पृष्ठ 10 का शेष.......

प्रसन्न हुए और कहा-'अमीचन्द, तू है तो हीरा किन्तु कीचड़ में पड़ा है।' इतना कहना था कि शराबी, कबाबी और वेश्यागामी अमीचन्द सब पापों को छोड़कर सच्चा आर्य बन गया और अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के प्रचार कार्य में लगा दिया।

पेशावर में सिपाही लेखराम को 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालने का आदेश दिया था। महर्षि के ब्रह्मचर्य का उस पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उसने पच्चीस के स्थान पर 36 वर्ष तक पालन किया और आगे चलकर वही लेखराम, धर्मवीर पंडित लेखराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने सत्संग से अपने जीवन की काया पलट दी। संसार में हम कोई भी काम करते हैं तो उसमें लाभ के साथ-साथ हानि की संभावनाएँ भी होती हैं, परन्तु सत्संग में लाभ ही लाभ होता है, हानि की कोई संभावना नहीं रहती।

पथिक जी ने सत्संग का वर्णन करते हुए कितना सुन्दर गीत लिखा है-

पी सद्ज्ञान का जल रे मना।
सत्संग वाली नगरी चल रे मना॥

इस नगरी में ज्ञान की गंगा,
जो भी नहाए हो जाए चंगा,
मल-मल के हो निर्मल रे मना॥ सत्संग....।
सत्संग का यह असर हुआ है,
बाहर से सब बदल गया है,
अन्दर से तू बदल रे मना॥ सत्संग....।
सत्संग के हैं अजब नज़ारे,
बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे,
पा सुख-शान्ति का फल रे मना॥ सत्संग....।
सत्संग का तो फल है निराला,
मन-मन्दिर में करके उजाला,
कर जीवन को सफल रे मना॥ सत्संग....।
किस्मत का चमका है सितारा,
उदित हुआ है भाग्य-तुम्हारा,
अवसर जाए न निकल रे मना॥ सत्संग....।
चल के 'पथिक' शुभकर्म कमा ले,
इस अवसर से लाभ उठा ले,
देर ना कर इक पल रे मना॥ सत्संग....।

आर्य वीर दल हरियाणा द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन शिविर

- गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ 26 मई से 2 जून।
- आर्य मंदिर सेक्टर 4 गुडगांव 2 जून से 9 जून तक।
- आर्य वीर दल रेवाड़ी (जाडरा) दो जून से 9 जून।
- गुरुकुल कुरुक्षेत्र एक जन से 5 जून।
- इंडियन मॉडल स्कूल सोनीपत दो जून से 9 जून।
- दयानंद मठ रोहतक 3 जून से 9 जून।
- गुरुकुल जूआं 3 जून से 9जून।
- आर्य वीर दल पानीपत 3 जून से 9 जून।
- आर्य वीर दल हांसी 3 जून से 9 जून।
- आर्य वीर दल भिवानी (बाढ़ड़ा) 16 से 23 जून।
- आर्य वीर दल मेवात 18 जून से 24 जून।
- आर्य वीर दल पलवल 9 जून से 14 जून।

आर्य वीरांगना शिविर

- आर्य वीरांगना शिविर फरीदाबाद दो जून से 9 जून।
- आर्य वीरांगना शिविर सेक्टर 4 गुडगांव 2 जून से 9 जून।
- वैदिक भक्ति साधना आश्रम 10 जून से 16 जून।
- गुरुकुल कुरुक्षेत्र 6 जून से 11 जून।
- हरियाणा प्रांतीय शिविर गुरुकुल इंद्रप्रस्थ 2 जून से 9 जून।
- सार्वदेशिक आर्य वीर दल राष्टीय शिविर शिवालिक गुरुकुल अलियासपुर अंबाला 2 जून से 16 जून।
- गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कालवा, गांव भड़ताना, गुरुकुल कुंभा खेड़ा, जिला भिवानी, जिला रेवाड़ी तथा जिला महेंद्रगढ़ में भी 6-6 शिविर विभिन्न स्थानों पर लगेंगे जिनकी तिथियां बाद में निश्चित की जायेंगी।

-वेदप्रकाश, मंत्री, आर्य वीर दल हरयाणा प्रदेश

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर — 27 मई से 2 जून 19
   स्थान-माता चन्नन देवी आर्य कन्या गुरुकुल
   पिल्लू खेड़ा मण्डी जिला जीन्द
2. आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी — 8 से 9 जून 19
   आवासीय आर्य वीर दल शिविर (लड़कों के लिए) — 2 से 9 जून 19
   स्थान-आर्यसमाज जाडरा (रेवाड़ी)

-रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत का शानदार परीक्षा परिणाम

EVERY YEAR BREAKING OLD RECORDS IN GETTING DISTINCTION

(BRILLIANT RESULT OF 2019)
CLASS- X

ARYA BAL BHARTI PUBLIC SCHOOL

90% Above - 31 Students
80% Above-34 Students
TOTAL MERIT 65 STUDENTS

G.T ROAD, PANIPAT, PH. NO. 0180-2639590, 99968-89083
CONGRATULATIONS ALL STUDENTS AND STAFF MEMBERS

90% Above - 31 Students
80% Above - 34 Students
TOTAL MERIT 65 STUDENTS

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और गांव-गांव में यज्ञ व वेद प्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञदान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा